

प्रथम दिवस आवरण FIRST DAY COVER



1914-2013



भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 वर्ष
100 YEARS OF INDIAN SCIENCE CONGRESS



Towards Scientific Temper

100 Years of Indian Science Congress

The Indian Science Congress Association (ISCA) owes its origin to the foresight and initiative of two British Chemists, namely, Professor J. L. Simonsen and Professor P.S. MacMahon. The Association was formed with the objective to advance and promote the cause of science in India, to hold an annual congress at a suitable place in India, to publish such proceedings, journals, transactions and other publications as may be considered desirable.

The first meeting of the Congress was held from 15-17 January, 1914 at the premises of the Asiatic Society, Calcutta, with Justice Sir Asutosh Mukherjee, the then Vice-Chancellor of the Calcutta University, as President. 105 scientists from different parts of India and abroad attended the Congress. Pandit Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of India attended the 34th Annual Session of the Indian Science Congress and the first Session after independence, held at Delhi from 3-8 January, 1947, as a General President. His personal interest in the Science Congress immensely enriched the activities of the Congress by development of a scientific atmosphere in the country, particularly among young generation. In fact from 1947 itself, a programme for inviting representatives from foreign societies and academies was included in the Science Congress.

From a modest beginning with 105 members and 35 papers communicated for reading at the first session, ISCA has grown into more than ten thousand member strong fraternity and number of papers has risen to nearly one thousand. ISCA has been actively represented in various foreign scientific academies/associations, namely British Association for the

Advancement of Science, American Association for the Advancement of Science, French Academy of Sciences, Bangladesh Academy of Sciences, Sri Lanka Association for the Advancement of Science, etc. with a view to have a first hand knowledge on topics of mutual interest.

With the passing years changes have been introduced in the Science Congress. In 1976, Dr. M.S. Swaminathan, the then General President of ISCA, introduced the Focal Theme of national relevance which is now discussed in every section, committee and forum during the annual session and several plenary sessions are organized around various facets of the Focal Theme in which scientists and technologists as well as policy makers and administrators interact with one another.

The centenary session of the Indian Science Congress is scheduled to be held from 3-7 January, 2013 at Kolkata. The theme for the session is "Science for shaping the future of India".

The design of the Commemorative Postage Stamp being released to mark this milestone depicts the spirit of the centenary session of the Indian Science Congress. A child, tender, mouldable and the future of India, is observing a flower through a magnifying lens.

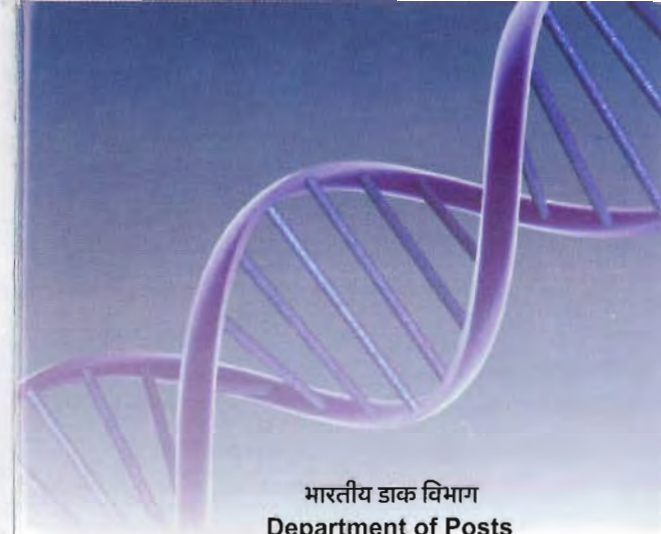
The Department of Posts is happy to release a Postage Stamp to commemorate the 100 years of Indian Science Congress.

Credits:-

Text : Based on the material received from the proponent

Stamp/FDC/Information Brochure : Dr. Tridha Gajjar of National Institute of Design, Ahmedabad

Cancellation : Alka Sharma



भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 वर्ष
100 YEARS OF INDIAN SCIENCE CONGRESS

विवरणिका BROCHURE



भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 वर्ष

भारतीय विज्ञान कांग्रेस संगठन (आईएससीए) का उद्गम दो ब्रिटिश रसायनज्ञों, नामतः प्रोफेसर जे. एल. सिमोनसन तथा प्रो. पी. एस. मैकमोहन की दूरदर्शिता एवं पहल का परिणाम है। इस संगठन का गठन भारत में विज्ञान के उद्देश्यों को प्रोत्साहित करने तथा उसे बढ़ावा देने, भारत में उपयुक्त स्थान पर वार्षिक सम्मेलन का आयोजन करने तथा ऐसी कार्यवाहियों, पत्रिकाओं, कारोबारों तथा अन्य प्रकाशनों को प्रकाशित करने के लिए जिन्हें वांछनीय समझा जाता हो, किया गया था।

कांग्रेस की पहली बैठक 15-17 जनवरी, 1914 को एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता के परिसर में आयोजित की गई थी तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति, न्यायमूर्ति श्री आशुतोष मुखर्जी इसके अध्यक्ष थे। विदेशों तथा भारत के विभिन्न भागों से 105 वैज्ञानिकों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जनरल प्रेजीडेंट के रूप में आजादी के बाद पहला सत्र, भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 34वें वार्षिक सत्र जो 3-8 जनवरी, 1947 को दिल्ली में आयोजित हुआ था, में भाग लिया। विज्ञान कांग्रेस में उनकी व्यक्तिगत रुचि से देश में, विशेषकर युवा पीढ़ी में वैज्ञानिक परिवेश के विकास के माध्यम से कांग्रेस के क्रियाकलापों में अत्याधिक वृद्धि हुई। वास्तव में, 1947 से ही, विदेश की सोसाइटियों और अकादमियों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित करने के लिए कार्यक्रम विज्ञान कांग्रेस में शामिल किया गया।

शुरुआत में पहले सत्र में 105 सदस्यों तथा प्रस्तुत किए गए 35 दस्तावेजों के साथ अब आईसीएसए 10 हजार से अधिक सदस्यों के बंधुत्व की भावना से सुदृढ़ हो चुकी है तथा दस्तावेज की संख्या बढ़कर लगभग 1000 हो चुकी है। विभिन्न विदेशी वैज्ञानिक अकादमियों/संघों जैसे ब्रिटिश एसोसिएशन फॉर दि एडवांसमेंट ऑफ साइंस, अमेरिकन एसोसिएशन फार दि एडवांसमेंट ऑफ साइंस, फ्रेंच अकाडेमी ऑफ साइंस, बांग्लादेश अकाडेमी ऑफ साइंस, श्रीलंका एसोसिएशन फॉर दि एडवांसमेंट

ऑफ साइंस आदि में आईएससीए को सक्रिय रूप में प्रतिनिधित्व दिया गया है ताकि पारस्परिक हित के विषयों पर प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की जा सके।

गुजरते हुए वर्षों के दौरान विज्ञान कांग्रेस में परिवर्तन किए गए हैं। 1976 में डा. एम. एस. स्वामीनाथन, आईएससीए के तत्कालीन जनरल प्रेजीडेंट ने राष्ट्रीय महत्व के प्रमुख विषय की शुरुआत की जिस पर वार्षिक सत्र के दौरान प्रत्येक अनुभाग, समिति तथा फोरम में चर्चा होती है तथा प्रमुख विषय के विभिन्न पहलुओं पर बहुत से पूर्ण सत्र आयोजित किए जाते हैं जिसमें वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद तथा नीति निर्माता और प्रशासक एक-दूसरे से विचार-विमर्श करते हैं।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस का शताब्दी सत्र 3-7 जनवरी, 2013 को कोलकाता में आयोजित होने जा रहा है। इस सत्र का विषय "भारत के भविष्य के निर्माण के लिए विज्ञान" है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के अवसर पर जारी किए जा रहे स्मारक डाक-टिकट की डिजाइन में भारतीय विज्ञान कांग्रेस के शताब्दी सत्र की भावना को प्रदर्शित किया गया है। एक कोमल तथा भोला-भाला बालक जो भारत का भविष्य है, एक आवर्द्धक लेंस के जरिए एक फूल का अवलोकन कर रहा है।

डाक विभाग भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 वर्ष की स्मृति में डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

- मूलपाठ** : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट/ : राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान,
प्रथम दिवस आवरण अहमदाबाद के डा. त्रिधा गज्जर
सूचना विवरणिका
विरूपण : अलका शर्मा



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 3 जनवरी, 2013
Date of Issue : 3 January, 2013

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 4.1 लाख*
Stamps Printed : 0.41 Million*

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press,
Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

* एक लाख प्रस्तावक हेतु
* 0.1 Million for Proponent